सिंह और कुत्ता

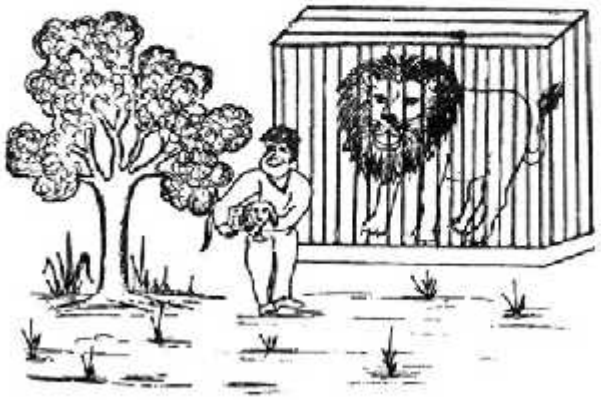

एक बार लन्दन में जंगली जानवरों का प्रदर्शन किया जा रहा था। उन्हें देखने के लिये दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे या बिल्लियां और कुत्ते लाने होते थे जो जंगली जानवरों को खिलाये जाते थे।

एक आदमी का जंगली जानवर देखने को मन हुआ। उसने गली में से एक कुत्ते को पकड़ लिया और उसे लेकर जानवरों के मालिक के पास पहुंचा। इस आदमी को जानवर देखने की इजाज़त दे दी गई और कुत्ते को सिंह के पिंजरे में फेंक दिया गया।

इस छोटे-से कुत्ते ने टांगों के बीच दुम दबाई और पिंजरे के एक कोने में दुबक कर बैठ गया। सिंह उसके पास आया और उसने कुत्ते को सूंघा।

कुत्ता पीठ के बल लेट गया, पंजे ऊपर की ओर उठा लिये और दुम हिलाने लगा।

सिंह ने उसे अपने पंजे से छुआ और उलट दिया।

छोटा-सा कुत्ता उछलकर खड़ा हुआ और अपनी पिछली टांगों के बल सिंह के सामने बैठ गया।

सिंह इस छोटे से कुत्ते को ध्यान से देखता रहा, उसने दायें-बायें अपना सिर हिलाया, मगर कुत्ते को नहीं छुआ।

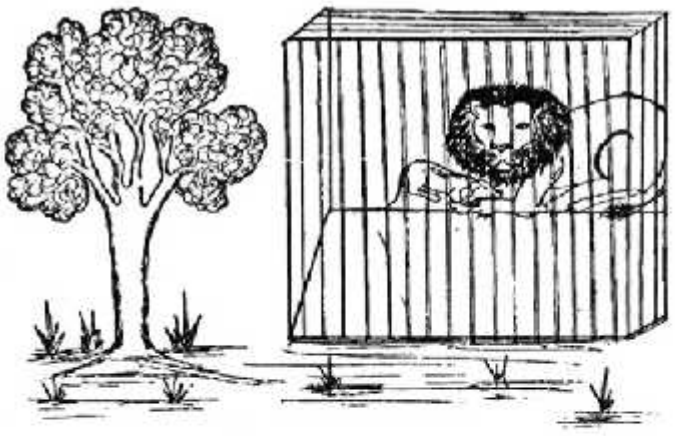

जंगली जानवरों के मालिक ने जब सिंह के पिंजरे में मांस फेंका तो सिंह ने उसमें से एक टुकड़ा काट लिया और बाकी कुत्ते के लिए छोड़ दिया।

शाम हुई तो सिंह सोने के लिये लेट गया। कुत्ता भी सिंह के करीब ही लेट गया और उसने अपना सिर सिंह के पंजों पर रख दिया।

उस दिन से यह छोटा सा कुत्ता एक ही पिंजरे में सिंह के साथ रहने लगा। सिंह ने कभी भी उसे किसी तरह की हानि नहीं पहुंचाई। वह मालिक द्वारा दिया जाने वाला मांस खाता, कुत्ते के साथ ही सोता और

कभी-कभार उसके साथ खेलता भी।

एक दिन एक रईस जंगली जानवरों को देखने आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया। उसने जानवरों के मालिक से कहा कि कुत्ता उसका है और अनुरोध किया कि वह उसे लौटा दिया जाये। मालिक ने कुत्ता लौटाना चाहा, मगर जैसे ही कुत्ते को पिंजरे से बाहर निकालने के लिए उसे बुलाया जाने लगा कि सिंह की गर्दन गुस्से से तन गई और वह गरजने लगा।

इस तरह वह छोटा-सा कुत्ता और सिंह साल भर एक ही पिंजरे में रहे।

एक साल के बाद कुत्ता बीमार हुआ और मर गया। सिंह ने खाना-पीना छोड़ दिया, कुत्ते को सूंघता, चाटता और पंजे से हिलाता-डुलाता रहा।

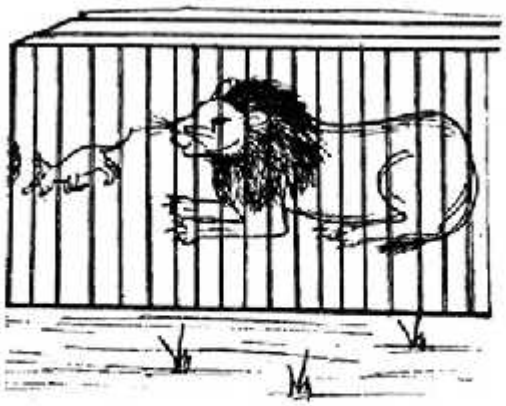

सिंह जब यह समझ गया कि कुत्ता मर चुका है तो वह अचानक उछलकर खड़ा हुआ, उसके अयाल तन गये, वह अपनी दुम को अगल-बगल मारने लगा, बार-बार पिंजरे की सलाखों से टकराने और फर्श को नोचने लगा।

सिंह दिन भर पिंजरे की सलाखों से इधर-उधर टकराता, छटपटाता और गरजता-तड़पता रहा। फिर वह मृत कुत्ते के पास जाकर पड़ रहा और चुप हो गया। मालिक ने मरे हुए कुत्ते को वहां से हटाना चाहा, मगर सिंह ने किसी को उसके पास भी फटकने नहीं दिया।

मालिक ने सोचा कि अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाये तो वह अपना दुःख भूल जायेगा। उसने एक जिन्दा कुत्ता पिंजरे में छोड़ दिया। मगर सिंह ने फौरन ही उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। फिर वह मृत कुत्ते का अपने पंजों से आलिंगन करके उसी तरह पांच दिनों तक पड़ा रहा।

छठे दिन सिंह मर गया।

अभ्यास

1. जानवरों का प्रदर्शन कहां हो रहा था?
2. आदमी कुत्ते को कहां से लाया और क्यों लाया?
3. शेर ने एक कुत्ते को नहीं मारा पर दूसरे को मार दिया। तुम्हें क्या लगता है, ऐसा क्यों हुआ।
4. इस कहानी का एक और नाम सोचो।
5. इन शब्दों के अर्थ लिखो और वाक्य बनाओ अयाल, आलिंगन, इजाज़त, प्रदर्शन, कभी-कभार

वाक्यों में जिन शब्दों के नीचे लाइन खींची है वह शब्द किसके लिए उपयोग किये गये हैं लिखो।

1. कुत्ते को सिंह के पिंजरे में डाल दिया। सिंह ने उसे अपने पंजे से छुआ और उलट दिया।
2. उन्हें देखने के लिये दर्शकों को पैसे देने पड़ते थे।
3. शाम हुई तो सिंह सोने के लिये लेट गया। कुत्ते ने अपना सिर उसके पंजों पर रख दिया।
4. एक दिन एक रईस जंगली जानवरों को देखने आया। उसने अपना कुत्ता पहचान लिया।
5. मालिक ने अनुरोध किया कि वह उसे लौटा दिया जाय।
6. मालिक ने सोचा कि अगर सिंह को दूसरा कुत्ता दे दिया जाये तो वह अपना दुःख भूल जायेगा।

जिन शब्दों के नीचे लाइन खींची हुई है उन शब्दों को क्या कहते हैं। गुरूजी से पूछकर लिखो।

वाक्य में किन–किन शब्दों से काम का पता चलता है। छांटकर लिखो। जैसे– सूँघना, खाना, पीना, टकराना आदि काम हैं। ऐसे सभी कामों को किया भी कहते हैं।

इन वाक्यों में किया क्या है, लिखो।

1. गली से एक कुत्ता पकड़ लिया।
2. कुत्ते को सिंह के पिंजरे में फेंक दिया।
3. कुत्ता पीठ के बल लेट गया, पंजे ऊपर की ओर उठा लिये और दुम हिलाने लगा।

मुहावरा	अर्थ	वाक्य में प्रयोग किया
दुम दबाना	भाग जाना।	मोहन शेर को देखकर दुम दबाकर भाग गया।
गुस्से से तनना	क्रोधित होना	कुत्ते को देखकर सिंह गुस्से से तन गया।
फटकने नहीं देना	_____	_____
टुकड़े–टुकड़े करना	_____	_____

छोटे से कुत्ते ने टांगों के बीच दुम दबाई और पिंजरे के एक कोने में दुबक कर बैठ गया। इस वाक्य में मुहावरा क्या है, लिखो।

1. आलिंगन करना 2. दुम हिलाना 3. दुबक कर बैठना

सही शब्द चुनकर खाली स्थान में भरो। (गुस्से, कुत्ता, सिंह)

1. उसने अपना सिर _____ के पंजों पर रख दिया।
2. सिंह समझ गया कि _____ मर गया है।
3. सिंह की गर्दन _____ से तन गई।

कर्फ्यू

क्या कभी तुम्हारे साथ ऐसा हुआ है कि कक्षा में जब तुम लोग बहुत शैतानी या शोरगुल मचा रहे होते हो तो मास्टरजी या बहनजी ने यह कहा हो कि सब के सब चुपचाप बैठ जाओ?

शहर या बस्ती या गांव में जब कर्फ्यू लगा दिया जाता है तो कुछ ऐसी ही स्थिति होती है। मुर्गा तो नहीं बनाते लोगों को पर सबको अपने घरों से निकलने की मनाही होती है। सिर्फ विशेष प्रयोजन से निकलने वाले कुछेक लोगों को कर्फ्यू पास दिए जाते हैं। जिनके पास ये पास होते हैं वे ही बाहर निकल सकते हैं।

दुकानदारों को दुकान बंद कर घर जाने को कह दिया जाता है। जब कर्फ्यू लगा हो तो जो लोग सड़क पर बाहर निकल जाते हैं उन्हें वापस घर जाने के लिए कहा जाता है। अगर वे ना माने तो गिरफ्तार करके जेल में भेजा जा सकता है। कर्फ्यू तब लगाते हैं जब किसी बस्ती में बहुत ज़्यादा झगड़ा हो जाता है। या फिर किसी कारणवश झगड़ा या लूटपाट होने का खतरा होता है।

मैंने बचपन में एक बस्ती के लोगों के बारे में एक कहानी सुनी थी जिन्हें कर्फ्यू का मतलब नहीं पता था। बात काफी पुरानी है। वह कहानी कुछ ऐसी थी.....

एक समय की बात है जगदीशपुर गांव में उड़ती-उड़ती खबर पहुंची कि पास के छपरा शहर में कर्फ्यू लग गया है। शाम के समय महेश चाचा के घर पर चौपाल बैठी। बलीटर चाचा मुंह से गुड़गुड़ निकालते हुए बोले - "क्यों भाई, सुना तुम लोगों ने, छपरा में कर्फ्यू लग गया है।"

"ये तो बड़ी अच्छी बात है।"

"नहीं बहुत बुरी बात है।"

नन्हा ननकू ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा - "अच्छी बात, बुरी बात, बुरी बात, अच्छी बात।"

चौपाल में बैठे और लोगों के दिमाग में भी बात साफ नहीं थी। रामशरण काका ताव में आ गए "भाई ठीक से फैसला कर लो, मैं कहता हूं कर्फ्यू बहुत बुरी चीज़ है।"

ननकू के दादा हलकू गांव में सबसे ज़्यादा उम्र के व्यक्ति थे। उन्होंने गुड़गुड़े का एक लम्बा कश लिया और बोले - "भाई नए ज़माने में नई-नई चीज़ें आ रही हैं। ये कर्फ्यू है क्या?"

इतना कहकर हल्कू काका लाठी लेकर बाड़े की तरफ भागे उनकी भैंस खूंटा तोड़कर रामअवधेश के खेत की तरफ जा रही थी।

जो लोग ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे थे, वे एकाएक चुप हो गए। नन्हा ननकू जो जीभ-होठ मरोड़ कर 'कर्फ्यू' बोलने की कोशिश कर रहा था बोला "करफू, करफू, करफू।"

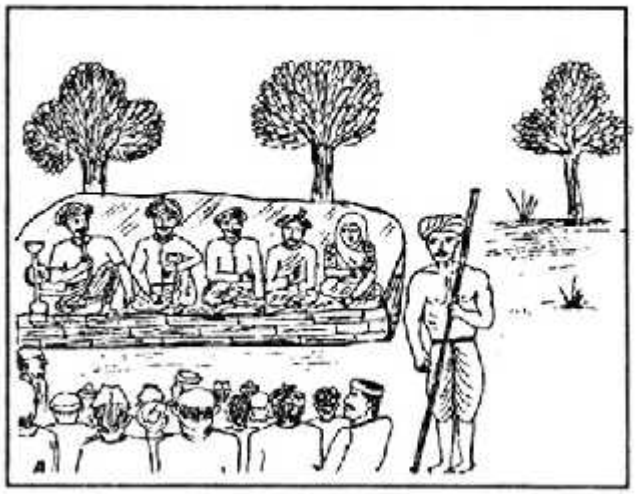

रामशरणजी जो पिछले साल ही शहर देखकर आए थे, बोले - "ये हलकू बेकार की बात बनाता है, शहर में मारकाट रोकने के लिए कर्फ्यू लगाया जाता है। हाकिम बोलता है कर्फ्यू लग जाए, तो कर्फ्यू लग जाता है और फिर बोलता है कर्फ्यू हट जाओ तो कर्फ्यू हट जाता है।"

अब तक हल्कू काका लौट आए थे। बोले- "तो क्या यह तेल जैसी कोई लगाने वाली चीज़ है? अगर ऐसा है तब तो बढ़िया चीज़ ही होगी।"

बलीटर चाचा से नहीं रहा गया बोले - "किसी को तो कुछ मालूम है नहीं, सिर्फ बकबक किए जा रहे हैं।"

ननकू के दादा बोल पड़े "मैं तो कहता हूं कि जब गांव के नज़दीक ही ऐसी चीज़ है तो क्यों न चलकर देख लें। मेरी भी बुढ़ापे की एक इच्छा पूरी हो जाए। पता नहीं फिर मेरे रहते कर्फ्यू लगे या न लगे।"

लोगों को बात जँच गई। पास के शहर में कर्फ्यू लगा है। क्यों न चलकर देख लें। तय हुआ अगली सुबह गांव से निकल लेंगे।

अगली सुबह जब लोग तैयार होकर निकलने लगे तो घर की औरतें ठान कर बैठ गईं। बोलीं - "ये क्या बात है, सिर्फ मर्द लोग ही कर्फ्यू देखने शहर जाएंगे। हम भी देखना चाहते हैं कर्फ्यू।"

अन्त में यही फैसला हुआ कि जब गांव के नज़दीक की ही बात है तो औरतों को भी कर्फ्यू दिखा ही दिया जाए।

और इस तरह करीब पच्चीस लोगों का झुंड गांव से निकल पड़ा। जैसे ही चौपाल के बाहर निकले कि दूसरी तरफ से हलकू की घरवाली पानी से भरा घड़ा लेकर आती दिखाई दी। ठीक उसी समय नन्हें ननकू ने ज़ोर की छींक मारी। सब लोग रुक गए।

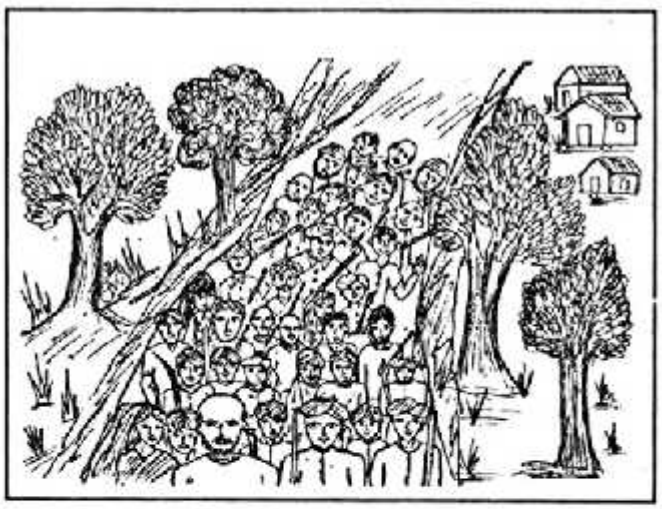

हलकू काका बोले - "पानी भरा घड़ा तो यात्रा के लिए बड़ा शुभ लक्षण है। दूसरी तरफ ननकू है तो छोटा बच्चा लेकिन छींक लगाने में अपने दादाजी को भी मात दे दी उसने। छींक तो अशुभ चीज़ होती है।"

इस पर सब चुप हो गए। ऐसे ही खड़े रहने के बाद बलीटर चाचा कुछ सोच कर बोले - "अरे भाई कर्फ्यू कहीं काट ले तो क्या करोगे।"

बात सबकी समझ में आ गई। सब लोग जल्दी-जल्दी अपने-अपने घरों से लाठी, भाला आदि ले आए।

हलकू काका बोले - "बताओ भला हम लोग असली चीज़ ले जाना ही भूल रहे थे।"

दोपहरी को जब ये काफिला शहर पहुंचा तो देखा सड़कें बिलकुल सूनी थीं। कहीं कोई बताने वाला भी नज़र नहीं आया। थोड़ा इधर-उधर घूमे तो दूर एक सिपाही दिखाई पड़ा।

ननकू के दादा चिल्लाए - "अरे ओ सिपाही भईया, ज़रा हमको बता दीजिए कि कर्फ्यू कहां लगा है।"

सिपाही मुड़ा। जब उसने इतने सारे लोगों को लाठी, भाले के साथ देखा तो मानो उसे सांप सूंघ गया। वह फौरन वहां से भाग खड़ा हुआ। उसके बाद लगातार सीटियां बजने लगीं। फिर देखते-देखते कई पुलिस वाले चारों तरफ आ जुटे।

चार दिनों के बाद सारे लोग वापस गांव पहुंचे। कर्फ्यू के बारे में इन लोगों ने बातचीत करने से मना कर दिया। कुछ महिलाओं ने ज़रूर कहा कि सबों को थाने में रखा गया था। इसी बीच फेंकनी को बेटा हुआ। फेंकनी इसी कारण से कर्फ्यू देखने नहीं जा पाई थी। बेटे का नाम रखा करफू सिंह।

अभ्यास :

1. ननकू के दादा के चिल्लाने के बाद क्या हुआ?
2. गुरूजी से चर्चा करो कि कर्फ्यू क्या होता है? कब लगता है? और क्यों?
3. (क) क्या तुम भी छींकने को अशुभ मानते हो? क्यों?

   (ख) क्या घड़ा भर कर पानी लाती औरत को देखने से यात्रा शुभ हो जाती है?
4. सिपाही इन लोगों को देख कर क्यों डर गया?
5. तुमने भी नयी चीज़ों के आने पर हुई मज़ेदार घटनाएं सुनी होंगी। ऐसी एक घटना कापी में लिखो।
6. इस कहानी में कौन-कौन से मुहावरे आए हैं? उनके नीचे लाइन खींचो और उनके मतलब पता कर उनसे दो-दो वाक्य बनाओ।
7. क्या तुम किसी मेले में जाते समय अपनी छोटी बहन को ले जाते हो या ले जाओगे? क्यों ले जाओगे या क्यों नहीं ले जाओगे? इस बारे में कक्षा में चर्चा करो।
8. अर्थ पता करो और एक-एक नया वाक्य बनाओ

   प्रयोजन काफिला सांप सूंघ गया